The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Special Issue 1 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

रवीन्द्रनाथ टैगोर की मानवतावादी शैक्षिक दृष्टिकोण

डॉ0 ज्योति दुबे तिवारी

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा, देव संस्कृति कॉलेज, दुर्ग

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18797906

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 16-01-2026

Published: 05-02-2026

Keywords:

मानवतावाद, प्रकृति-समन्वय, स्वतंत्र चिंतन, विश्वबंधुत्व

ABSTRACT

यह शोधपत्र रवीन्द्रनाथ टैगोर की मानवतावादी शिक्षा.दृष्टि की समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। टैगोर का मानवतावाद व्यक्ति की स्वतंत्रता, गरिमा, सृजनशीलता और सार्वभौमिक भाईचारे पर आधारित एक समग्र चिंतन है, जो आज की बदलती शैक्षणिक तथा सामाजिक परिस्थितियों में विशेष महत्व रखता है। आधुनिक शिक्षा जहाँ तकनीकी निर्भरता, प्रतिस्पर्धात्मक दबाव और मूल्य.संकट से जूझ रही है, वहीं टैगोर की शिक्षा.दृष्टि शिक्षा को जीवन, प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं से जोड़ने का मार्ग प्रदान करती है। टैगोर का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास है, जिसमें भावनात्मकए नैतिक और सौंदर्यबोधात्मक पक्ष भी समान रूप से सम्मिलित हों। आज के समय में, जब मनुष्य वैश्वीकरण, सांस्कृतिक विघटन और सामाजिक तनावों के बीच खोया हुआ प्रतीत होता है, टैगोर की श्विश्वमानवश की कल्पना आपसी समझ, सहयोग और शांति की दिशा में एक प्रभावी वैचारिक आधार प्रस्तुत करती है। प्रकृति के साथ सामंजस्य का उनका सिद्धांत पर्यावरण संरक्षण के समकालीन विमर्श को भी गहराई से प्रभावित करता है। वर्तमान डिजिटल युग में शिक्षा का मानवीयकरणए सीखने की स्वतंत्रता, सृजनात्मक वातावरण और अनुभव.आधारित अधिगम की जो आवश्यकता उभरती है, वह सीधे.सीधे टैगोर की शैक्षणिक सोच से जुड़ती है। इस प्रकार, टैगोर की मानवतावादी शिक्षा.दृष्टि केवल साहित्यिक चिंतन नहीं, बल्कि आधुनिक शिक्षा.व्यवस्था के लिए एक आवश्यक और

व्यावहारिक दिशा.निर्देशक भी है।

प्रस्तावना

रवींद्रनाथ टैगोर, जिन्हे भारत के महानतम विचारकों और शिक्षाविदों में से एक माना जाता है, ने शिक्षा के प्रति एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जो पारंपरिक अकादमिक सीमाओं से परे था। उनके विचार इस विश्वास पर आधारित थे कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने के बारे में भी होनी चाहिए। टैगोर की शिक्षा संबंधी दृष्टि उनके मानवतावादी आदर्शो से गहराई से जुड़ी हुई थी, जहाँ स्वतंत्रता, रचनात्मकता और कलाओं को शिक्षा में एकीकृत करना सर्वोपरि था। यह देखते हुए कि कैसे उनका मानना था कि शिक्षा सार्वभौमिक भाईचारे को पोषित कर सकती है, पूर्वी और पश्चिमी संस्कृतियों का मिश्रण कर सकती है और व्यक्तियों को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने में मदद कर सकती है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण केवल कक्षा या विद्यालय की चारदीवारी तक सीमित नहीं था। बल्कि, यह एक व्यापक दृष्टिकोण था जिसका उद्देश्य विद्यार्थी के बौद्धिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास को एकीकृत करना था। टैगोर के लिए शिक्षा का उद्देश्य एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना था जो संतुलित, आत्म–जागरुक और समाज में सार्थक योगदान देने में सक्षम हो।

वे अक्सर शिक्षा को ''आत्म–साक्षात्कार'' की प्रक्रिया के रुप में वर्णित करते थे, जहाँ व्यक्ति अपने अंतर्मन और अपने परिवेश के साथ अधिक सामंजस्य स्थापित करता है। आत्म–साक्षात्कार का यह विचार टैगोर के शैक्षिक दृष्टिकोण का मूल आधार था, जिसमें इस बात पर बल दिया गया था कि ज्ञान से एक स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और सहानुभूतिशील व्यक्ति का निर्माण होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, शिक्षा केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने या जानकारी रहने तक सीमित नही थी–यह बौद्धिक और भावनात्मक बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण एक पूर्ण विकसित मानव के रुप में विकास करने के बारे में थी।

बंगाली साहित्य और दर्शन के महान व्यक्तित्व रवींद्रनाथ टैगोर ने अपने दर्शन को पश्चिमी अर्थो में स्पष्ट रुप से ''मानवतावाद'' का नाम नही दिया। हालांकि, उनक रचनाओं में निरंतर एक गहरी मानवतावादी भावना झलकती है, जो मानवता की अंर्निहित गरिमा और क्षमता पर बल देती है, साथ ही वेदांत और उपनिषदों की व्याख्या में निहित गहन आध्यात्मिक समझ को भी दर्शाती है। उनका मानवतावाद आध्यात्मिकता का खंडन नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिकता का खंडन नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक मानवतावाद है, जहां मनुष्य के भीतर दैवीयता की खोज की जाती है और मनुष्य को दैवीयता की अभिव्यक्ति के रुप में देखा जाता है। यह दृष्टिकोण उनकी कविताओं, उपन्यासों और निबंधों में स्पष्ट है, जो निरंतर व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और अंतर्राष्ट्रीय समझ का समर्थन करते है।

टैगोर का मानवतावादी दृष्टिकोण

1. **वैयक्तिकता और आत्म–साक्षात्कार पर बल** – टैगोर का मानवतावाद प्रत्येक व्यक्ति के अद्वितीय महत्व पर केंद्रित है। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में अंतर्निहित दैवीयता होती है, जो विश्वभारती विश्वविद्यालय में उनके शैक्षिक दर्शन में परिलक्षित होती है। उनकी शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य कठोर पाठ्यक्रम या सिद्धांतों को थोपने के बजाय वैयक्तिकता, रचनात्मकता और आत्म–खोज को पोषित करना था। उन्होंने आत्म–साक्षात्कार के महत्व पर बल दिया, जिसे वे

व्यक्तिगत संतुष्टि और सामाजिक प्रगति दोनों का मार्ग मानते थे। यह मानव जाति के विशुद्ध भौतिकवादी या उपयोगितावादी दृष्टिकोण से विपरीत है। उनका ''विश्वमान'' का विचार इसी आदर्श को दर्शाता है। उनका अंतर्राष्ट्रीयवादी दृष्टिकोण उनक`लेखन, यात्राओं और वैश्विक शांति एवं समझ के लिए उनके प्रयासों में स्पष्ट रुप से झलकता है। उन्हें 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला, जिसका एक कारण इस सार्वभौमिकवादी दृष्टिकोण में उनका योगदान भी था।

2. हठधर्मिता और परंपरा की आलोचना : परंपरा का सम्मान करते हुए भी, टैगोर हठधर्मिता और रीति–रिवाजों के अंधभक्ति की आलोचना करते थे। उन्होंने धार्मिक विश्वास के प्रति तर्क संगत और आलोचनात्मक दृष्टिकोण का समर्थन किया, और स्थापित सिद्धांतों के मात्र पालन की अपेक्षा आध्यात्मिक अनुभव के महत्व पर बल दिया। यह आलोचनात्मक दृष्टिकोण उनकी बविताओं और नाटकों में परिलक्षित होता है, जो अक्सर प्रचलित ज्ञान और सामाजिक मानदंडों को चुनौती देते हैं। वे परंपरा को एक सजीव, विकसित होती इकाई के रुप में देखते थे, न कि नियमों के एक स्थिर समूह के रुप में।

3. सामाजिक न्याय और मानवाधिकार – टैगोर का मानवतावाद सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता से गहराई से जुड़ा हुआ था। उन्होंने हाशिए पर पड़े और शोषितों के अधिकारों का समर्थन किया और सामाजिक सुधार एवं समानता की वकालत की। उनकी रचनाओं में अक्सर गरीबों और दलितों के संघर्षो का चित्रण मिलता है, जो सामाजिक न्याय एवं मानवाधिकारों की आवश्यकता को उजागर करता है। स्वदेशी आंदोलन में उनकी भागीदारी और औपनिवेशिक शोषण की उनकी आलोचना सामाजिक सुधार के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

4. सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा : विश्वभारती में टैगोर का शैक्षिक दर्शन उनके मानवतावादी दृष्टिकोण का उदाहरण है। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली बनाने का प्रयास किया जो न केवल बौद्धिक विकास बल्कि नैतिक, आध्यात्मिक और कलात्मक विकास को भी बढ़ावा दे। प्रकृति,रचनात्मकता और व्यावहारिक शिक्षा पर उनका जोर ऐसे सर्वांगीण व्यक्तित्वों को विकसित करने के उद्देश्य से था जो समाज में सार्थक योगदान दे सकें। यह सर्वांगीण दृष्टिकोण विशुद्ध रुप से अकादमिक या व्यावसायिक शिक्षा के मॉडलों से भिन्न है।

टैगोर का शिक्षा दर्शन

स्वतंत्रता और आत्म–अभिव्यक्ति की भूमिका

टैगोर का मानना था कि सच्ची शिक्षा स्वतंत्रता पर आधारित होनी चाहिए। यह स्वतंत्रता केवल बौद्धिक ही नहीं, बल्कि भावनात्मक और रचनात्मक भी थी। उन्होंने चिंतन की स्वतंत्रता की पुरजोर वकालत की, जहाँ छात्रों को प्रश्न पूछने, खोज करने और स्वतंत्र रुप से सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। यह उस समय विशेष रुप से क्रांतिकारी था जब भारतीय शिक्षा में कठोर, रटने वाली शिक्षा का ही बोलबाला था। टैगोर के लिए, शिक्षा का अर्थ एक ऐसा वातावरण तैयार करना था जहाँ शिक्षार्थी बिना किसी डर या प्रतिबंध के खुलकर अपनी अभ्यिव्यक्ति कर सकें।

टैगोर ने रचनात्मक आत्म–अभिव्यक्ति के महत्व पर भी बल दिया, इसे व्यक्तिगत विकास का एक शक्तिशाली साधन माना। उन्होंने यह समझाा कि प्रत्येक व्यक्ति में अद्वितीय प्रतिभा और रचनात्मक क्षमताएं होती है, और शिक्षा का कर्तव्य है कि वह इन प्रतिभाओं का पोषण करे, छात्रों को अपनी आवाज खोजने और विभिन्न तरीकों से खुद को व्यक्त

करने में मदद करे। कला, संगीत, नृत्य या लेखन के माध्यम से, टैगोर ने शिक्षार्थियों को ऐसी रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित किया जो उनके मन और भावनाओं को उत्तेजित करें। ऐसा करके, छात्र न केवल अपनी बौद्धिक, क्षमताओं बल्कि अपनी भावनात्मक गहराई और सामाजिक चेतना का भी विकास कर सकते हैं।

शिक्षा में कलाओं का समावेश

टैगोर के शिक्षा दर्शन की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक कला को अधिगम प्रक्रिया में एकीकृत करने पर उनका बल था। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के विपरीत, जो अक्सर कला को विज्ञान और गणित जैसे अधिक 'गंभीर' विषयों से अलग मानती थीं, टैगोर कला को व्यक्ति के समग्र विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानते थे।

टैगोर के लिए कलाएँ केवल मनोरंजन या सजावट के साधन नही थीं, बल्कि आत्म–अभिव्यक्ति और आत्म–खोज की प्रक्रिया का अभिन्न अंग थीं। उनका मानना था कि कलाओं से जुड़ना–चाहे वह चित्रकला हो, संगीत हो, नाटक हो या कविता–छात्रों को अपनी भावनाओं से जुड़ने और अपने अंतर्मन को अभिव्यक्त करने के अवसर प्रदान करता है। इससे छात्रों को स्वयं को और विश्व में अपने स्थान को गहराई से समझने में सहायता मिलती है।

टैगोर के शिक्षण संस्थानों, विशेष रुप से शांतिनिकेतन, का उद्देश्य कला को दैनिक शिक्षा में एकीकृत करना था। विद्यालय का पाठ्यक्रम कलात्मक गतिविधियों से भरपूर था, और छात्रों को अपनी शैक्षणिक यात्रा के हिस्से के रुप में अभिव्यक्ति के विभिन्न रुपों का अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। यह दृष्टिकोण टैगोर के इस विश्वास को दर्शाता था कि सच्ची शिक्षा पाठ्यक्रमों और परीक्षाओं तक सीमित नहीं हो सकती, बल्कि इसमें मानवीय अनुभव के संपूर्ण दायरे को शामिल करना आवश्यक है।

टैगोर का सार्वभौमिक बंधुत्व का दृष्टिकोण

टैगोर के शैक्षिक दर्शन का एक सबसे प्रभावशाली पहलू सार्वभौमिक बंधुत्व का उनका दृष्टिकोण था। उपनिवेशवाद और बढ़ते राष्ट्रवाद के युग में, टैगोर ने सांस्कृतिक,भौगोलिक और नस्लीय सीमाओं से परे लोगों के एक–दूसरे को देखने के तरीके में एक मौलिक परिवर्तन का प्रस्ताव रखा। उनका मानना था कि शिक्षा को हमारी साझा मानवता के प्रति जागरुकता को बढ़ावा देना चाहिए, जो नस्ल, धर्म और राष्ट्रीयता द्वारा निर्मित कृत्रिम विभाजनों से परे हो।

टैगोर के विचार में, शिक्षा का अंतिम लक्ष्य केवल कुशल पेशेवर या ज्ञानवान व्यक्ति बनाना नहीं था, बल्कि ऐसे वैश्विक नागरिक तैयार करना था जो सभी लोगों की परस्पर निर्भरता को समझते और सराहते हों। उन्होंने ऐसी शिक्षा की वकालत की जो सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करे और विभिन्न समुदायों के बीच आपसी सम्मान, समझ और सहयोग को बढ़ावा दे।

पश्चिमी और पूर्वी संस्कृतियाँ : एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण

टैगोर एक दूरदर्शी व्यक्ति थे जो पश्चिमी और पूर्वी सांस्कृतिक मूल्यों के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण में विश्वास रखते थे। उनका स्वयं का बौद्धिक सफर दोनों परंपराओं के प्रभाव से प्रभावित था, और उनका मानना था कि दोनों में ही

बहुमूल्य अंतर्दृष्टि निहित है। टैगोर भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं में गहराई से जुड़े हुए थे, लेकिन साथ ही वे पश्चिमी विज्ञान, तर्कशास्त्र और शिक्षा पद्धतियों के कई पहलुओं की प्रशंसा भी करते थे।

हालांकि, टैगोर पश्चिमी शिक्षा प्रणाली के आलोचक थे, विशेष रुप से यांत्रिक शिक्षा और व्यक्तिवाद पर इसके जोर के, जिसे वे छात्र की आध्यात्मिक और भावनात्मक आवश्यकताओं से अक्सर अलग मानते थे। उन्होंने पूर्व और पश्चिम दोनों के सर्वोत्तम तत्वों के संश्लेषण की वकालत की, जिससे शिक्षा का अधिक संतुलित और समग्र स्वरुप प्राप्त हो सके। उनकी आदर्श शिक्षा प्रणाली में, छात्रों को प्राचीन भारतीय परंपराओं के ज्ञान की सराहना करना सिखाया जाएगा, साथ ही उन्हें आधुनिक पश्चिमी ज्ञान और तकनीकी प्रगति की समझ भी प्राप्त होगी।

शांतिनिकेतन में, टैगोर ने संस्कृतियों के इस संगम को साकार करने का प्रयास किया। विद्यालय के पाठ्यक्रम में भारतीय दर्शन और कला के साथ–साथ पश्चिमी साहित्य, विज्ञान और संगीत जैसे विषय भी शामिल थे। छात्रों को वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जहाँ वे दोनों संस्कृतियों की खूबियों का उपयोग करके एक संतुलित और सार्थक जीवन का निर्माण कर सकें।

प्रकृति और आनंद के माध्यम से शिक्षा

टैगोर के शैक्षिक दर्शन का एक और महत्वपूर्ण तत्व यह विचार था कि सीखना एक आनंदमय, अनुभवात्मक प्रक्रिया होनी चाहिए। वे प्रकृति सीखने के लिए आदर्श वातावरण प्रदान करती है। शांतिनिकेतन में, कक्षाएँ अक्सर खुले में स्थापित की जाती थीं, जहाँ छात्र प्राकृतिक परिवेश में सीखते थे। टैगोर का मानना था कि प्रकृति की सुंदरता और शांति रचनात्मकता को प्रेरित कर सकती है, जिज्ञासा को बढ़ावा दे सकती है और छात्रों के मन में शांति की भावना पैदा कर सकती है।

टैगोर के अनुसार, सीखना कोई बोझिल कार्य नहीं बल्कि एक आनंदमय अनुभव होना चाहिए जो जिज्ञासा और आश्चर्य को जागृत करे। उनका मानना था कि जब विद्यार्थियों को खेल, अन्वेषण और अपने परिवेश के साथ प्रत्यक्ष अंतःक्रिया के माध्यम से सीखने का अवसर मिलता है, तो उनमें आजीवन सीखने के प्रति प्रेम विकसित होने की संभावना अधिक होती है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को अपने आसपास की दुनिया से गहरा जुड़ाव बनाने में भी मदद करता है, जिससे प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी और संरक्षण की भावना विकसित होती है।

शिक्षा में खेल का महत्व

टैगोर शिक्षा में खेल की भूमिका के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने यह माना कि खेल केवल एक मनोरंजक गतिविधि नहीं बल्कि सीखने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। टैगोर के अनुसार, खेल विद्यार्थियों के लिए सामाजिक कौशल, समस्या–समाधान क्षमता और रचनात्मकता विकसित करने का एक माध्यम था। यह उन्हें एक सुरक्षित और पोषणपूर्ण वातावरण में विभिन्न विचारों, भूमिकाओं और दृष्टिकोणों के साथ प्रयोग करने का अवसर प्रदान करता था।

टैगोर के शैक्षिक दर्शन ने विद्यार्थियों को सीखने को एक सतत् आनंदमय प्रक्रिया जो औपचारिक शिक्षा के साथ समाप्त नहीं होती बल्कि जीवन भर चलती रहती है। पाठ्यक्रम में खेल, रचनात्मकता और प्रकृति को शामिल करके, टैगोर की शिक्षा की दृष्टि सीखने और व्यक्तिगत विकास के प्रति आजीवन प्रेम को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई थी।

भारतीय शिक्षा में टैगोर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

टैगोर प्रचलित शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते हैं जो किताबी शिक्षा पर जोर देती है। उनके अनुसार,शिक्षा का बौद्धिक उद्देश्य क्षमताओं का विकास है, जिन्हें शिक्षा के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए। ये क्षमताएँ है सोचने और कल्पना करने की शक्ति।

टैगोर के शैक्षिक विचारों को अन्य शिक्षाविदों ने भी साझा किया है और उनके कई नवाचार अब सामान्य शैक्षिक प्रथाओं का हिस्सा बन गए हैं, लेकिन उनका विशेष योगदान सामंजस्य, संतुलन और व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास पर जोर देने में था।

टैगोर जैसे दूरदर्शी और महान शिक्षाविद् ने पचास साल पहले ही आज की समस्या का समाधान कर दिया था। आर्थिक शक्तियाँ आज के शिक्षकों को शिष्यों की तलाश करने के लिए बाध्य करती है, लेकिन जीवन के प्राकृतिक क्रम में शिष्य को ही शिक्षक की तलाश करनी चाहिए। टैगोर द्वारा रचित शिक्षक–छात्र संबंध इस संदर्भ में एक आदर्श है। यह दक्षिण एशिया के आरंभिक सहशिक्षा कार्यक्रमों में से एक बन गया। इसकी स्थापना ने कई दिशाओं में अग्रणी प्रयासों को जन्म दिया, जिनमें भारतीय उच्च शिक्षा और जनशिक्षा के साथ–साथ अखिल एशियाई और वैश्विक सांस्कृतिक अदान–प्रदान के लिए एक आदर्श भी शामिल है। वैश्विक गाँव की अवधारणा पर विचार करने वाली शुरूवाती शिक्षाविदों में से एक के रूप में, टैगोर का शैक्षिक मॉडल बहुजातीय, बहुभाषीय और बहुसांस्कृतिक परिस्थितियों में शिक्षा के रूप में अद्वितीय संवेदनशीलता और उपयुक्तता रखता है, जो आर्थिक असमानता, राजनीतिक असंतुलन और सामाजिक बुराईयों जैसी ज्ञात स्थितियों के बीच मौजूद है।

आधुनिक शिक्षा में टैगोर का योगदान

टैगोर उस समय की प्रचलित शिक्षा प्रणाली से पूरी तरह असंतुष्ट थे और स्कूलों को भूमिका–आधारित शिक्षा के कारखाने कहते थे। फिर उन्होंने प्रभावी शिक्षा के लिए स्वतंत्रता के सिद्धांत की वकालत की। उन्होंने कहा कि बच्चों को स्वतंत्रता दी जानी चाहिए ताकि वे अपनी इच्छानुसार विकसित हो सकें। शिक्षा की प्रक्रिया के माध्यम से एक व्यक्ति को अपने सामाजिक जीवन के साथ सामंजस्य बिठाते हुए एक सामंजस्यपूर्ण व्यक्ति के रुप में उभरने में सक्षम होना चाहिए। उन्होंने शिल्प, संगीत, चित्रकला और नाटक के माध्यम से रचनात्मक आत्म–अभिव्यक्ति का सुझाव दिया।

आधुनिक शिक्षा में टैगोर का प्रमुख योगदान 1901 में बोलेपुर में शांति निकेतन की स्थापना है। प्राचीन आश्रमों की तर्ज पर बना यह विद्यालय विश्व भारती नामक एक विश्व विश्वविद्यालय के रुप में विकसित हुआ। यह शांति का निवास है जहाँ शिक्षक और छात्र पूर्ण भाईचारे की भावना से एक साथ रहते हैं। इस संस्थान का आदर्श वाक्य है, 'जहाँ पूरी दुनिया अपना एक ही घोंसला बनाती है।' इसमें खुले स्थान और प्राकृतिक वातावरण से घिरा स्वतंत्रता का वातावरण है। यह देश, जाति, धर्म या राजनीति से परे सभी के लिए खुला है। यह सादा जीवन और उच्च विचार पर केंद्रित है और इसका वातावरण आध्यात्मिक और धार्मिक हैं।

टैगोर ने बातचीत करते हुए शिक्षण को सर्वोत्तम विधि बताया और भ्रमण और भ्रमण पर जोर दिया। उन्होंने वाद–विवाद और चर्चा के माध्यम से शिक्षण और अधिगम का समर्थन किया जिससे स्पष्ट चिंतन की शक्ति विकसित होती है। उन्होंने गतिविधि पद्धति अपनाई जो शिक्षार्थी को शरीरिक रुप से स्वस्थ बनाती है। उन्होंने अनुमानात्मक पद्धति

भी अपनाई जहाँ छात्र एक खोजकर्ता की स्थिति में होता है। उन्होंने मुक्त वातावरण पर जोर दिया जो शिक्षार्थी को आत्म–अनुशासित बनाता है।

टैगोर के शिक्षा दर्शन में, बौद्धिक विकास के साथ–साथ सौंदर्यबोध का विकास भी महत्वपूर्ण था; तथा विद्यालय के दैनिक जीवन में संगीत, साहित्य, कला और नृत्य को बहुत महत्व दिया गया था।

शिक्षा के भविष्य के लिए टैगोर का दृष्टिकोण

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा संबंधी विचार अपने समय में क्रांतिकारी थे और आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। स्वतंत्रता, रचनात्मकता, कलाओं के एकीकरण और सार्वभौमिक बंधुत्व की खोज पर उनका जोर शिक्षा के स्वरुप और वास्तविकता के लिए एक गहरा खाका प्रस्तुत करता है। टैगोर की दृष्टि हमें याद दिलाती है कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति की पूर्ण क्षमता का पोषण करने के बारे में है, जिससे समग्र रुप से समाज को लाभ हो। आज के तेजी से बलते विश्व में, जहाँ तकनीकी प्रगति अक्सर मानवीय मूल्यों पर हावी हो जाती है, टैगोर का शैक्षिक दर्शन न केवल कुशल श्रमिकों को, बल्कि दयालुख विचारशील और जिम्मेदार वैश्विक नागरिकों को तैयार करने की आवश्यकता की याद दिलाता है। शिक्षा के भविष्य की ओर देखते हुए, रजनात्मकता,भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सार्वभौमिक समझ पर टैगोर का जोर शिक्षकों, नीति निर्माताओं और शिक्षार्थियों को समान रुप से प्रेरित कर सकता है कि वे शिक्षा को वैश्विक सद्भाव और व्यक्तिगत संतुष्टि के साधन के रुप में पुनर्कल्पित करें।

निष्कर्ष –

टैगोर का मानवतावाद यद्यपि पश्चिमी मानवतावादी विचारों का प्रत्यक्ष रुप से प्रतिपादन नहीं है, फिर भी व्यक्तिगत गरिमा, सामाजिक न्याय और अंतर्राष्ट्रीय समझ जैसे मूल मूल्यों को साझा करता है। हालांकि, पूर्वी आध्यात्मिक परंपराओं में निहित होने के कारण यह अद्वितीय रुप से समृद्ध है। आत्म–साक्षात्कार, सार्वभौमिक बंधुत्व और परंपरा के साथ गहन जुड़ाव पर उनका जोर एक अधिक न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण विश्व के लिए एक सशक्त और चिरस्थायी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। उनकी विरासत सामाजिक सुधार, शैक्षिक नवाचार और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के आंदोलनों को प्रेरित करती रहती है। शिक्षा के प्रति समग्र दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर और प्रत्येक व्यक्ति में निहित दैवीयता पर बल देकर, टैगोर का दर्शन शांति, समझ और सतत विकास से परिपूर्ण भविष्य की रुपरेखा प्रस्तुत करता है, जो मानवीय गरिमा और परस्पर जुड़ाव के मूलभूत मूल्यों पर आधारित है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर अपने प्रयासों और उपलब्धियों के माध्यम के रुसो, पेस्टालोजी, फ्रोबेल, मोंटेसरी, डेवी और समकालीन संदर्भ में मैल्कम नोल्स जैसे अग्रणी शिक्षाविदों के वैश्विक नेटवर्क का हिस्सा है। यद्यपि टैगोर अपने देश के एक उत्कृष्ट प्रतिनिधि हैं–वह व्यक्ति जिन्होने इसका राष्ट्रगान लिखा, वे वास्तव में पूरी धरती के मानव है, पारंपरिक भारतीय और आधुनिक पश्चिमी संस्कृतियों, दोनों की सर्वोत्तम उपज। टैगोर के शैक्षिक दर्शन का मूल प्रकृति, संगीत और जीवन से सीखना था। उन्होंने अपने शैक्षिक आदर्शो को साकार करने के लिए संहिनिकेतन की स्थापना की। यही कारण है कि उनकी शिक्षा मानव मन द्वारा सहज रुप से ग्रहण की जाती है। टैगोर ने व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं के अर्थ और कार्यात्मक महत्व को उस तरह विस्तारित किया जैसा उनसे पहले किसी और ने नहीं किया था। आदर्श शिक्षक में दार्शनि, कवि, रहस्यवादी, समाज सुधारक, वैज्ञानिक तथा एक सच्चे कर्मठ व्यक्ति की प्रतिभा का समावेश होना चाहिए। उसे सभी प्रकार के लोगों और उनकी आकांक्षाओं, मानव व्यक्तित्व के सभी पहलुओं, मानव अनुभव के सभी स्तरों, प्रयास

और उपलब्धि के सभी क्षेत्र को ध्यान में रखना चाहिए। टैगोर द्वारा रचित शिक्षक–छात्र संबंध इस संदर्भ एक आदर्श है। यह दक्षिण एशिया के आरंभिक सहशिक्षा कार्यक्रमों में से एक बन गया। इसकी स्थापना ने कई दिशाओं में अग्रणी प्रयासों को जन्म दिया, जिसमें भारतीय उच्च शिक्षा और जन शिक्षा के साथ–साथ अखिल एशियाई और वैश्विक सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए आदर्श शामिल हैं। वैश्विक गाँव के संदर्भ में सोचने वाले आरंभिक शिक्षाविदों में से एक के रुप में, टैगोर के शैक्षिक मॉडल में बहु–नस्लीय, बहुभाषी और बहु–सांस्कृतिक परिस्थितियों में शिक्षा के लिए एक अनूठी संवेदनशीलता और उपयक्तता है, जो स्वीकृत आर्थिक विसंगतियों, राजनीतिक असंतुलन और सामाजिक बुराइयों के बीच विद्यमान है।

संदर्भ :

1. बासु, ए.एन.1. (2006), भारतीय शिक्षा में टैगोर के योगदान का एक पहलू, शैक्षिक भारत, (5)7.

2. शिक्षा के क्षेत्र में विचारक : रवींद्रनाथ टैगोर। एडुट्रैक्स। मार्च 2002।

3. थैंकचन, टी.सी. (2007), शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार, कोट्टायमः वी प्रकाशक।

4. भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, प्रो. एस.पी. गुप्ता, शारदा बुक भवन, पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स 11 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद – 211002 श्रीमती (डा) अलका गुप्ता संस्करण 2010

5. https://share.google/V4KOEI7dsQHoq5YoC

6. https://share.google/LbSB11Gc8tJ3eR7km

7. https://share.google/cSCDl9F97i3rznhyd

8. https://share.google/ashvI9BblrBpjBtei

9. https://share.google/rXM015FlXUIgSKmQj

10. https://share.google/4tM14ZFqImNsLdkIa

11. https://share.google/y3WhoCmvOuLRwcPqt